

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिख ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ६
ग्रंथ नाम वि. प्रकरण.
पूजा चतुर्थ कृष्णाजन्म.
विषय मराठी काव्य.



Rajavade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yaswantrao Chavhan
Editor-in-Chief of the Rajavade Sanshodhan Mandal
Editor of the Rajavade Sanshodhan Mandal
Editor of the Rajavade Sanshodhan Mandal



2.1.95

PRITI

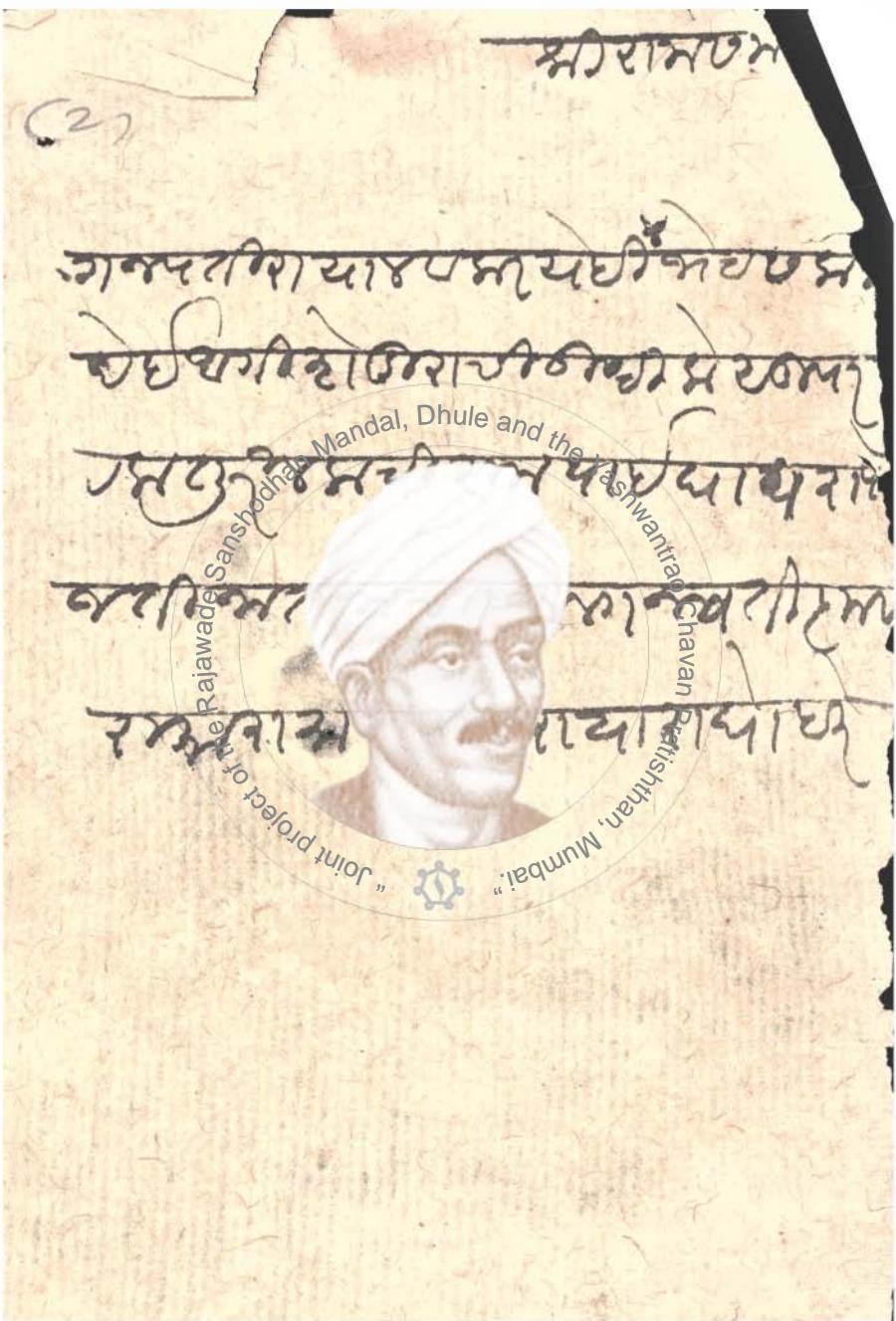
4961464

07024

13/10/13, 9:15

॥ यक्षघरी हो प्राजरव्याटी ॥ सातघर
 ॥ रत्नी ॥ य ॥ दोनघर ऊहेतभींगाची ॥
 ॥ यात्पुत्री क्षीरगाची ॥ लेथेवाठम
 ॥ नाही जायाची ॥ चोकी बोसठी ॥ चो
 ॥ की बैसल्ली ॥ य ॥ ॥ दोघरी नोबतया
 ॥ हो ॥ नवाजतावाजतभाहु ॥ आका
 मर्शोची साक्षी पाहु ॥ लेथेयकरवेळी
 ॥ २ ॥ य ॥ साताघरांचहु कुनवाठ ॥
 ॥ यावरवरवेवतीयकपेठ ॥ गोपा
 ॥ छनाथे केळा घोठ ॥ गुरुची बोली
 ॥ गुरुची बोली ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

Sansadhan Mandak, Phule and the Yaati
 नोजेनी न लुप्त निजगुज्जा ॥ आनु
 ॥ भासीन भासा ॥ य ॥ ७ ॥ डोकावी
 शब्दनालो ॥ रप है चीक्कमासी
 ॥ गेले ॥ गीवुलें ॥ शुक्रमे ॥ चुती ची
 नुहती नाववेश ॥ सेगुरुनाथे के
 ॥ देश ॥ ८ ॥ सहजसार ॥ हृतमोच्चदु
 ग ॥ श्वी देवन्मातृमातृधासेग ॥ आद्युल
 ॥ चातीचीला सेगे ॥ रथांदिमेसउल्लासा
 ॥ अलयतमयतेरुनचीमवतेरुपचीन
 ॥ प्रगटके अमधासेगेमाय ॥ ९ ॥ नीजाचे ॥
 ॥ सुननीर्तुन आपलेखापण ॥ प्रकाशग
 पीचानाभागे ॥ उत्तेपुरुष कोभागे ॥ स्व
 यभुव्यावीनाशउभागे ॥ क्षराक्षरुच्याची
 शोभाग ॥ आंगेवीनयांगवापकसर्वी
 ॥ आंगजे ॥ प्रोत्पुकीफक्कोभागे ॥ १० ॥
 ॥ वेदवाचा नेथेवेदमोन्पतेथे ॥ सीवदीन
 ॥ उरुक्कानाहीग ॥ कशीरुद्धोधपाहीग ॥
 ॥ बोलीबोलाचीलेफार्स ॥ मौमासीमौम
 मौमीगाहीग ॥ आरुपरुपडोलीयाजेलस
 ॥ लक्ष्मीलक्ष्मीतपाहीगमाय ॥ ११ ॥ नीजा



(3)
धूम इंतश्हाह लेफारड़ान्दे ॥३
नामेश्वराठनपनपाठासीकायेआलाग
लाअसेकरनीपुकौवीवितोवीधात
॥ऐसेवदेविवहितोपरीतनमानीतो
॥तलानारदरचम्भा बि ॥मुदोले
रहशाभंकर मधुमाकोनीबोले
द्विः ॥ नाम्भरे
भागीठुसीसी दोप्रापती
येहोचीइहर ॥ घायसेजोउ
संपतीवीभएष्टावधगणीतरे
स्ताकुड्डेउका ॥५॥ तुत्याति
करानेबांडांगनिकाठानी ॥ ठेठुसेव
स्तिठुचक्किठोठेठुक्सेसोसीसी
येकामीनियेअसेबलवहुनिम्निम्न
पा



The Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and the Kashwantrao Chavhan
Society, "Member"

(3)

(नेका) ज्ञान सेवने परीनजा वैष्णवस्थधां मा
 मती॥५॥ प्राधीका मिनि च्याकृद्दोर्वचने
 क्रोधा, नीतो चतला। आउसा चामगड़े
 मत्यन्य करनी घानार है त्रिचीला॥
 काशी प्रहु घुकुनी पकुप तिको पुनर्जे
 त्रौवंनां ये लेन
 असासा गति॥
 त्रौठि क्रेर मे वा-
 वस्या चालु इग्वां गुघुकुनी रु
 गेका। ये कुनी तीटा बहु को धम्य
 ती सरख्या चीपरी सानी वृणी ताखे
 चिते वह की जवानि॥ ठाता आकृमी
 सा चीआठेमी सांगत क्षमा याचे पा
 चक्षु लुपुवी ठानी चहुने इहुने



गुरुकृष्णस्ते । न सेपा दीनो दीपकङ्कठां
 कुलिशुन्य दिसि ॥ पीता माता वधुभ
 गीनि चुक्ता मातृङ्क नहो प्रकुलिश
 सेहु एनि नरके पोळ धरिता ॥ १७
 करीवोरम्याने रथयतु निबोळा वरि
 बसो । सुवश्वर न जगत्पानीन
 मावरुवरिले
 स्तुल समग्राना
 सागातेमतुरि
 सुरनेश्वरुक्तेकनकमणीप्राणविनिध
 वि ॥ मुनुच्छाचीडेकीरुधीरं सहितो वंड
 धंदिकी ॥ सुगद्धाईद्य सज्जु विहृ
 छिन्नस्तरोरी ॥ सुवण्णचीपात्रे
 ह्यनिकवीतोरवरि धंडि ॥ १८ ॥



(6)

तिरस्कारोनीयावकुञ्जराषु
 च्छादीवकमको आगी दीति ने तोने
 धरीनीज श्री विधरुर कुञ्जे।) मुधभ
 हृष्ण निविष्वद्गीच प्यावग अपारी
 साहमा गेसी क्षाम्भी नव अस्तो
 पावति परा
 न कर निकर
 हाथात लवर
 ए।) अनेकामा तरो लावगणु नीय
 गोग करए। संसेन गीच गीज हव
 द्युत याको यक बुला।। १४।) मग पर्ण
 जालात धीज न नी दासी वह की
 आसे डासाता बानू पेन दिजे मासी
 प्रावली। वीरामी कुम्ह लिपु न



"Portrait of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwant Rao Gavade Publishing Committee, Mumbai."

(7)

रसवस्तारीक्षनसे। अताका काने
 हेतापावीपुरुषाईळितो भवनस। १५
 आसेवज्जीमातोपरीममपि द्युनेनमनि
 लो। वीधाया नेमास्य। निउलीछीठीके
 तेचीघउक्तो। मुखीतेमातेनेकथीलोहि
 सतेयाठनीटक
 पतिष्ठसौभाग्य
 वेजीनीपुरुषार
 कोद्देहेस्था। ०
 वृक्ती। पुरुषीउनीबीनउनिद
 यरथनंदेश। नयतेहाजा। येक
 पद्धिद्वयामिरद्येखरा। १६। असे
 प्रकृतियाभ्युपर्यकरीतीयापीकरवा।
 विक्लोकीतो येतीठिमगीरी



Gajeshwarananda Mardal Phule and the
 Kashwantrao Chavhan
 Priyatman Munshi

है वति दीवा॥। दुकनी है बुनी पीर
 नी मगडा टो निस्त्रावा॥। कथी
 दी अबेटो डिमगीरी नीरितो नीरखी
 ला॥। १८॥। साहुति काकथी तिये परि
 मेवा गुणी॥। सारिके नीकृद्वाकरकाव्यपं
 णी॥। मापवत्ताव
 हुही पडे बिपव
 द्याच्याक घट्टान
 काननी कृतवेत्तवस्ताधनाटो॥। आकोउगाच
 सलेखी एजुनी श्रीयास्ती॥। सानारदेह क
 वीक्षेपजनिश्ययेही॥। २०॥। वीचारका रि
 म्याबरानकेला॥। संसार ठार छीवी एगेला
 पुकुपुकु बोलत शोभूतोला उगाच प्रीवा
 नकोवी भ्रवोला॥। २१॥। रत्तीकाचुनी टोप



जन्मानुकेनां॥ कर्माकुर्केति योतिद्वजेति
 रेनां प्रभारोक्तरोवेतीकां येयेथे॥ ते
 पातंगानां रद्धिश्च तोये॥ २५॥ मुनीमल्ल
 कामनयेगकेशासूरसनेता घर्वुड
 वीकोपुकां वहेनां सनीचीटां॥ महा
 कीनीहेकेनीनि
 शुर्तुभवतुगारी
 इ॥ योवंशीहो
 यपर्णी॥ जानोनी
 इं मूर्तीजवागीपल्ली॥ २६॥ गगोसिकरीकं
 वीकासेनीसरेवैतासद्वांनोपतो॥ नानानुस
 नवाद्यो॥ गाधेवनकरीवैसोनीयापर्वती॥
 ॥ वर्ष्णेसुंदरभुघलेउभयोताकेति नवेनी
 हो॥ एसोसोखउसेपरतुनविटआचेख
 अचीरठो॥ २७॥



"Joint Photo of Mahashodhan Mandal, Dhule and the Vashishtha Chavans Praising Sage Nimbarka"

(१०)

नुचर्मनियनिवीक्षोकुनिसुनिगेकातुमा
मूवनि ॥ बोक्लेवोजननीसीवेयत्यन्
योकेक्षीदुल्लीकामीनि ॥ क्रीडेहीमवन
सुसोखधरनी ॥ जोगीसुमद्दकीनि ।
हेतुतेक्लक्कोजावग्राम्यनिगुण्यस
सीवसुनि ॥ २६

कुलियांठीमा
गोसीमुख्ये ॥ अथा
येइक्केगेसद सावदीवडीउत्ती
यासुख्ये ॥ जोप्रातसुनिरमेसवे
तीसीटोकायेखावीडो ॥ गेज प्र
ज्ञात दीचवरहेकुष्णीकरणांएगीते
प्राप्त होधीजेउमी तिनें ॥ चोर

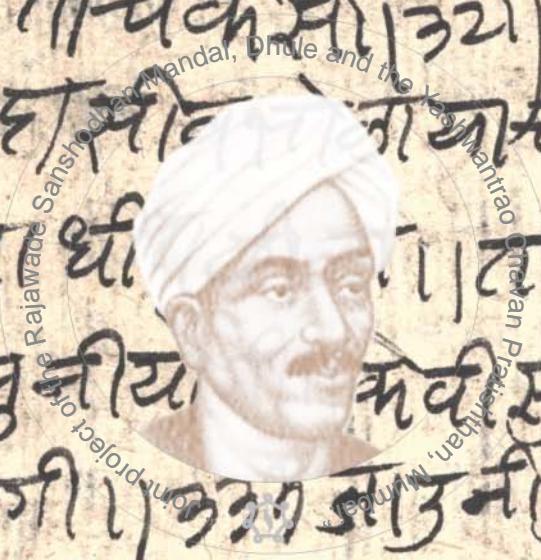


(11)
परक्षसेसवतिने ॥ कायेशाथ
कयावरीकांचुनी ॥ सासीहेतुरव
दास्तविकोचानि ॥ १३०० यापनीवहुन
व्याकुलतेपडे ॥ भालप्रस्तंकपीटी
वहनीवउ ॥ आगोनयेनीयेनी
राहिका ॥ रेव
ना ॥ १३०१ गोड
तनारहचावी
गेमजुहवारा ॥
नारुचेमजूह
तद्देहितबारा ॥ चहकीहृदिसत
रकीबारा ॥ १३०२ कोकीकेसउउपव
वाजैतीवहोतसंकरापच्छवागे ॥ बा
येरक्गुणीपववागे ॥ तेहनीकर्मि
मीपकनागे ॥ १३०३ ॥



of the Rajawade Sarshoghan Mandal, Dhule and the Krishnwantoo Chavhan Publishing House, Mumbai
"Jotiprabha Number"

कोकी की मणि तिर्सीत कवी छुड़ा
 तरी प्रजग में बीमवी छवी छुड़ा । भारवा
 तीकी खारची जैसे ॥ स्वाधी असु
 निनयोगी चक्रे मे ॥ ३२ ॥ बोकती
 जनसदा सह न आयी हो अ
 सेयाबाधी ॥ ३३ ॥ दापसागे
 लनवी मुनीय कवी सुरवनही
 तीर ज्ञानी ॥ ३४ ॥ जातु न मुनीवहे
 प्रगता । भारवा ॥ छुड़ा वीण बहुत व्या
 कुछ तो भरवा ॥ प्राण सागी जग में है
 इमंकां ॥ ऐ कुनी प्रगंसदा सीवन्नारी
 गा ॥ ३५ ॥ जाकुवी वह तसे प्रगता



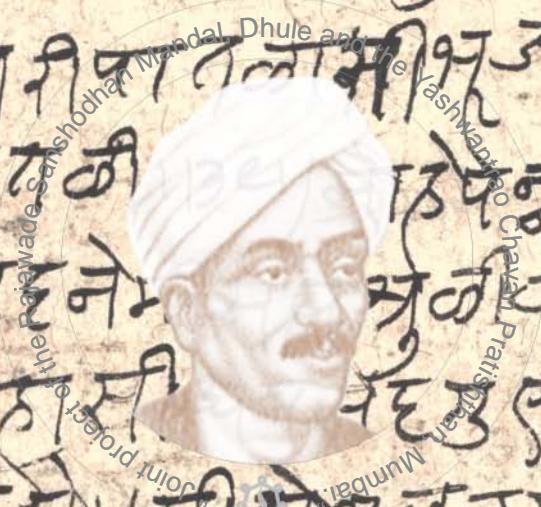
On the Rajawade Sanshodhak Mandal, Dhule and the
 Kshemantik Odyan Prashantran, Number
 ३२, Project of the

कायसद्युनीजासीकमांगे। (३५) नेवं
 करुकुतुगो। चाक्तुश्रमहारमेजे
 संगे। (३६) (नेवी) देस्तुकुडीरीरे
 मवाकोधयेइवबहुगीरउल्ला।
 उपरहवीलुवर्माएसुदिः। कुही
 नेपडुनहोरा। (३७) तेज
 एवचनस्या। शास्त्राके। (तेजी
 कीसीवेनिजमस्ताका।) यापरीधरनी
 याईरीरिजोतमीपातवाशीवरेगीर
 जाश्रामी। (३८) आवुउलघुनी
 वरणीरीटकपूर्ण। तोपावतीनेहि
 अकीकपाधाहोनीउक्तामगहावम
 गी। (तेजोकीहोअसेकोन्हारी। (३९)



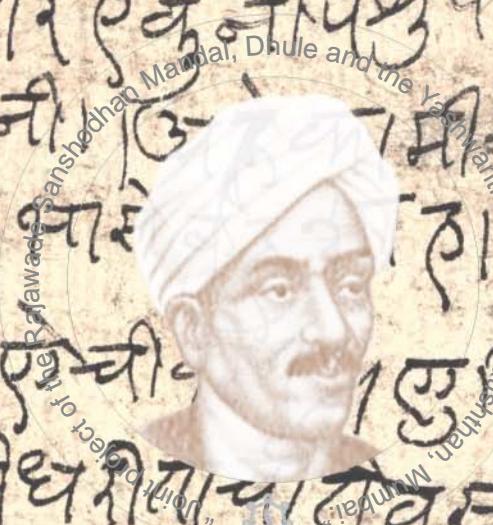
राजारामचन्द्र मांडल और डॉ. अश्विनीचंद्र चावणी
 द्वारा बनाया गया चित्र।

(15) **प्री**
बोलेश्रीहारनिलकृहवासकेकावालर्वी
साउसीसी॥ अठेटउकतामयुरमजक
घाठोकितिपै। उसी॥ नोठेमोरमी
काळकृष्णधरगेमाथीसुवध्यायुक्ती॥
येथेकातरीकातलाभीभूजगोजावे
तुवाभुदाही
इांकवरनो
वैष्णगहासी
नासीतसा॥ प्रीतोकुछनसेप्रवावु
तसेस्थालुंयसेबोलति॥ हेतोनाम
धरीतरतटीकीजेवस्तीवनःपवति
प्रीतोस्थालुनसेयसेप्रकुपतितुक
मवानेष्वर्ती॥ बेळाच्छेष्टीकायेकुञ्ज



Joint Project of the Rajewade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Kashikapati Chavhan Pratishthan
Number: 1000
Title: Praise of Kashikapati Chavhan
Date: 18th century AD

१५
मित्रका श्रुति गेन लगी रोकी है।
इसी॥ जो द्वावा कथवदेताया उउवीसा
मीरह अवामीद्या॥ (रामाचेकरी इसे
वाक्यपूर्व लेखी वस्यनानी छये॥ ४७॥
हेय गोपा रहेकुनी पशु पती वीस्मीत
ज्ञावेमनी उँडु
जहुली भासे
दाठक बण्डची
धावो निधरी यादा तो वेत्ता से सोडी
मणाडोगउया॥ ४८॥ तीरोका तुपुर से क
थी बठर से कार सकी गरी॥ तो लोके म
जाण लुकुनी दूसरी को चीक सी सुद्धी
न॥ नी जास्त मी सरवे तुजवी लगे क
गपा सवानी॥ जाओभी तुम्हीयो भय



Digitized by
Santoshawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the
Yashwant Rao Gaekwad Library, Mumbai
Digitized by
Santoshawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the
Yashwant Rao Gaekwad Library, Mumbai

परननस्तेऽयेषागेमादनि

कुशिवग्रवां वाक्यरात्मानं इत्यात्मान
सामग्र्या निरहार केष्ठे ॥ उसने
ग्रीष्मरदया कोवीथकी ॥ महेश
क्षीकौवक्षी ते जाग्नी ॥ ठां
तनुका तु स ॥ ग्रीष्मवनाने
पथीचाक्राः अमुक्तुन ॥ ने
वधूच्याददा-वा द्वारुदस्यवा द्वी ॥
उठेशरववा द्वानस्तेभीथगाढी ॥
बहुषणसेवा सतुश्वेषारीरी ॥ पुजा
भीकीकेवी हेग्धोपच्चारी ॥ नरवा
ना छातेद्वासलिगइगाई ॥ सुखे



The Rajawade Sanskrut Mandal, Dhule and the Yashwant Rao Ganavat Pradhikaran, Mumbai

श्रीराम
स्त्रीराम वायुहम्भः क्षीपा मनस्तायं परमं ध्याया क्षीपा
प्रदक्षिण स्तूति नमः श्रीपा द्विष्टुष्टुपे रीम अर्थी च
अनन्त इन्द्र छाते तोहरा श्रीक्षीपा मनस्ताये रहा क्षीपा
यामन्त्र इष्टप्राप्ताया मेवीना यागा नाश्चेंद्रीं छोता
वाटी श्रीपा मन्त्रे इष्टप्रीयायि श्रुत प्रेरु पीडा ए पू
च्छरायं दुष्ट स्त्री नारायण यथा ज्ञानोग्रही द्विष्टुपे
यं द्विजाना वार
योगधित्त परीत
नमेनमक्षिरं पुष्टी
ज्ञासु रुद्ध्या मिरामं रारमापन न अनभावद
अपहं च व मुमुक्षुम उमं तं छोली तु धु लु धनं प
नीक्षुक्षुरं तमं ल्वृष्ट्याग्न त्रातु अपाक्षु
मम्पत्तुं गाना यामदक्षिणं परेद्याहा पा पक्षी
उपक्षिमं दाही च मेराय ए पातु जाहं च दृथ्या



"Joint Project of the Kajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Prakashan, Mumbai"

(17) चर्णयात्तिरमोस्तुदेवान्वेष्यवृत्त्यतां
वशत्तीमेष्यनम्भरप्रद्वातमेवरक्षीपूरा
त्रेष्यपरंगागीडाम्भिर्जंजाखंउल्लाक
स्मितिस्ताद्विष्टांतीन्विपूर्वम्
स्यांप्रधीष्यारघुतांच्युरुरमदि
ओऽच्युवद्युहुरुरुतारेमुख्यमदि
सुधस्त्युष्मदा
पयामीष्यता
एव्युपूरुतारुहु
आद्याम्भपर्वत्यतांमम
श्रीमस्त्वयाणमराष्मदा।

(18) उत्तीर्णीष्यन्वेहाकंभुवाप्तचीतं शारामरक्षा
स्त्रोत्रंष्युणश्चित्तमव्युत्त्वाप्तिमारुः रुद्रमारुम



The text on the manuscript page is written in a traditional Indian script, likely Devanagari. There are several lines of text, some of which are crossed out with a red ink. The text is arranged in two columns, with the first column on the left and the second on the right. The script is fluid and expressive, typical of handwritten manuscripts. The paper has a light beige or cream color, showing signs of age and wear.



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com